IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 12, Issue 3, May - June 2025

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.028

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 3, May- June 2025 |

सीकर जिले में कृषि भूमि उपयोग की प्रवृत्तियाँ: एक भौगोलिक अध्ययन

अनुप्रिया कुमारी मूण्ड[1] डॉ. हेमंत मंगल[2]

शोधार्थी, भूगोल विभाग, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरु (राजस्थान), भारत[1]

आचार्य, भूगोल विभाग, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरु (राजस्थान), भारत[2]

सारांश

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ की जनसंख्या का एक बड़ा भाग आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर करता है। कृषि की उत्पादकता और स्थिरता का गहन संबंध भूमि उपयोग के स्वरूप एवं उसकी भौगोलिक दशाओं से होता है। राजस्थान राज्य, विशेषतः इसका शेखावाटी क्षेत्र, जिसमें सीकर जिला प्रमुख है, जलवायु की विषमता, सीमित जल संसाधनों और विविध स्थलाकृतियों के कारण कृषि भूमि उपयोग के संदर्भ में विशिष्ट स्थान रखता है। भूमि उपयोग की प्रवृत्तियाँ न केवल कृषिगत उत्पादन को प्रभावित करती हैं, बल्कि ग्रामीण समाज की आर्थिक संरचना, पर्यावरणीय संतुलन एवं संसाधनों के प्रबंधन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अतः सीकर जिले में कृषि भूमि उपयोग की बदलती प्रवृत्तियों का भौगोलिक विश्लेषण अत्यंत आवश्यक हो जाता है। यह शोध–पत्र सीकर जिले की कृषि भूमि उपयोग की प्रवृत्तियों का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह पहचानना है कि जिले की भौगोलिक विशेषताओं जैसे मिट्टी, वर्षा, तापमान, स्थलाकृति एवं जल स्रोत ने कृषि भूमि के प्रयोग को किस प्रकार प्रभावित किया है। साथ ही यह भी अवलोकन किया गया है कि जनसंख्या वृद्धि, शहरी विस्तार, तकनीकी नवाचार और सरकारी योजनाओं जैसे बाह्य कारकों ने भूमि उपयोग में किस प्रकार के परिवर्तन उत्पन्न किए हैं।

मूल शब्द : कृषि भूमि, संसाधनों प्रबंधन, सीकर जिला, भूमि उपयोग प्रतिरूप

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 3, May- June 2025 |

प्रस्तावना :

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ की लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। कृषि की प्रकृति एवं उत्पादकता का सीधा संबंध भूमि उपयोग की प्रवृत्तियों से होता है। भूमि का उपयोग केवल एक आर्थिक गतिविधि न होकर सामाजिक, पर्यावरणीय और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। भूमि उपयोग की प्रवृत्तियाँ न केवल प्राकृतिक कारकों जैसे जलवायु, मिट्टी, स्थलाकृति एवं जलस्रोत दृ से प्रभावित होती हैं, बल्कि मानवजनित कारक जैसे जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण, तकनीकी विकास और सरकारी नीतियाँ भी भूमि उपयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

राजस्थान राज्य का शेखावाटी क्षेत्र, विशेषकर सीकर जिला, भौगोलिक दृष्टि से अर्ध–शुष्क क्षेत्र में स्थित है, जहाँ कृषि गतिविधियाँ जल संसाधनों की उपलब्धता, वर्षा की अनियमितता, और भूमिगत जल पर निर्भरता जैसी जटिल परिस्थितियों के बीच संचालित होती हैं। यहाँ की भूमि उपयोग प्रणाली विविधतापूर्ण है, जहाँ परंपरागत कृषि पद्धतियाँ और आधुनिक तकनीकों का मिश्रण देखने को मिलता है। विगत कुछ दशकों में सीकर जिले में भूमि उपयोग के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले हैं। जैसेदृ पारंपरिक खाद्यान्न फसलों की जगह नकदी फसलों का प्रचलन बढ़ना, भूमिगत जल संसाधनों का अति दोहन, जोतों का खंडन, शहरी क्षेत्र के विस्तार के कारण कृषि भूमि में कमी, एवं फसल विविधता में बदलाव।

इन बदलती प्रवृत्तियों का जिले की कृषि अर्थव्यवस्था, खाद्य सुरक्षा, पर्यावरणीय संतुलन और ग्रामीण जीवन शैली पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है। भूमि की गुणवत्ता, उत्पादन की स्थिरता और संसाधनों की दीर्घकालिक उपलब्धता जैसे प्रश्न आज शोध का विषय बनते जा रहे हैं। अतः यह अत्यावश्यक हो गया है कि इन प्रवृत्तियों का भौगोलिक दृष्टिकोण से विश्लेषण कर उनके कारणों और प्रभावों को समझा जाए तथा भविष्य के लिए व्यावहारिक एवं सतत भूमि उपयोग नीतियों का सुझाव दिया जाए।

यह शोध–पत्र इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु तैयार किया गया है, जिसमें सीकर जिले के कृषि भूमि उपयोग की वर्तमान स्थिति, भौगोलिक कारकों का प्रभाव, समयानुसार हुए परिवर्तन तथा उनसे उत्पन्न सामाजिक–आर्थिक परिणामों का समग्र मूल्यांकन किया गया है। यह अध्ययन न केवल अकादमिक दृष्टिकोण से उपयोगी है, बल्कि नीति निर्माताओं, योजनाकारों, पर्यावरणविदों एवं कृषकों के लिए व्यावहारिक दिशा–निर्देश भी प्रस्तुत करता है।

शोध उद्देश्य :

इस शोध का मुख्य उद्देश्य सीकर जिले में कृषि भूमि उपयोग की प्रवृत्तियों का भौगोलिक विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं–

- सीकर जिले में कृषि भूमि उपयोग के वर्तमान स्वरूप की पहचान करना।
- समय के साथ कृषि भूमि उपयोग में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
- भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का अध्ययन करना।
- कृषि भूमि के प्रकार, उपयोग स्तर, सिंचाई सुविधा, जोत आकार एवं फसल विविधता की भौगोलिक विशेषताओं को समझना।
- भूमि उपयोग प्रवृत्तियों का जिले के पर्यावरण, ग्रामीण जीवन एवं कृषि उत्पादकता पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन करना।
- सतत भूमि उपयोग एवं कृषि विकास हेतु संभावित उपायों एवं रणनीतियों का सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध पद्धति एवं आंकड़ों के स्रोत :

प्रस्तुत शोध–पत्र द्वितीयक आंकड़ों की सहायता से तैयार किया गया है। इस हेतु भूमि उपयोग से संबन्धित विभिन्न आवश्यक आंकड़ों का संकलन कर शोध–पत्र का कार्य पूर्ण किया गया है। द्वितीयक आंकड़ों के प्रमुख स्रोत निम्न प्रकार से है–

- भारत सरकार की जनगणना रिपोर्ट (Census of India) – 2001, 2011
- राजस्थान राज्य भू–अभिलेख विभाग एवं सीकर जिले के भूमि अभिलेख कार्यालय
- राजस्थान राज्य कृषि विभाग, जयपुर एवं जिला कृषि अधिकारी, सीकर
- राजस्थान राज्य दूरस्थ संवेदन केन्द्र (RSAC), जोधपुर
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) एवं संबंधित जर्नल्स
- राजस्थान स्टेट गजेटियर और जिला सांख्यिकी पुस्तिका
- राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (NSSO) की कृषि संबंधी रिपोर्ट्स

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)
| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|
| Volume 12, Issue 3, May- June 2025 |

अध्ययन क्षेत्र :

अध्ययन क्षेत्र सीकर जिला शेखावाटी प्रदेश का महत्वपूर्ण भाग है जो कि राज्य के उत्तरी–पूर्वी भाग में फैला हुआ है। प्रस्तुत अध्याय में सीकर जिले के भौगोलिक पर्यावरण की विस्तार से विवेचना की गयी है। इसके अंतर्गत जिले के भौगोलिक पक्षों का अध्ययन किया गया है जिसमे जिले की स्थिति एवं विस्तार, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रशासनिक संगठन, यातायात, उच्चावच, जलवायु, अपवाह, भू– गर्भिक संरचना, खनिज, मिट्टियाँ, भूमि उपयोग वनस्पति एवं जीव जन्तुओं का वर्णन किया गया है। सीकर जिला $27^0 21'$ उत्तरी अक्षांश से $28^0 12'$ उत्तरी अक्षांश तथा $74^0 44'$ पूर्वी देशान्तर से $75^0 25'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। सीकर जिला राजस्थान राज्य के उत्तरी–पूर्वी भाग में स्थित है। यह जिला उत्तर में झुन्झनु जिले से, उत्तर– पश्चिम में चुरू जिले से, दक्षिण–पश्चिम में नागौर जिले से ओर दक्षिण–पूर्व में जयपुर जिले से घिरा हुआ है। जिले का उत्तरी–पूर्वी कोना हरियाणा राज्य के महेन्द्रगढ़ जिले की सीमा को छुता है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 7742.43 वर्ग किमी. है। सीकर की जनसंख्या जनगणना 2011 के अनुसार के 2,67,733 है।

अध्ययन क्षेत्र का अवस्थिति मानचित्र

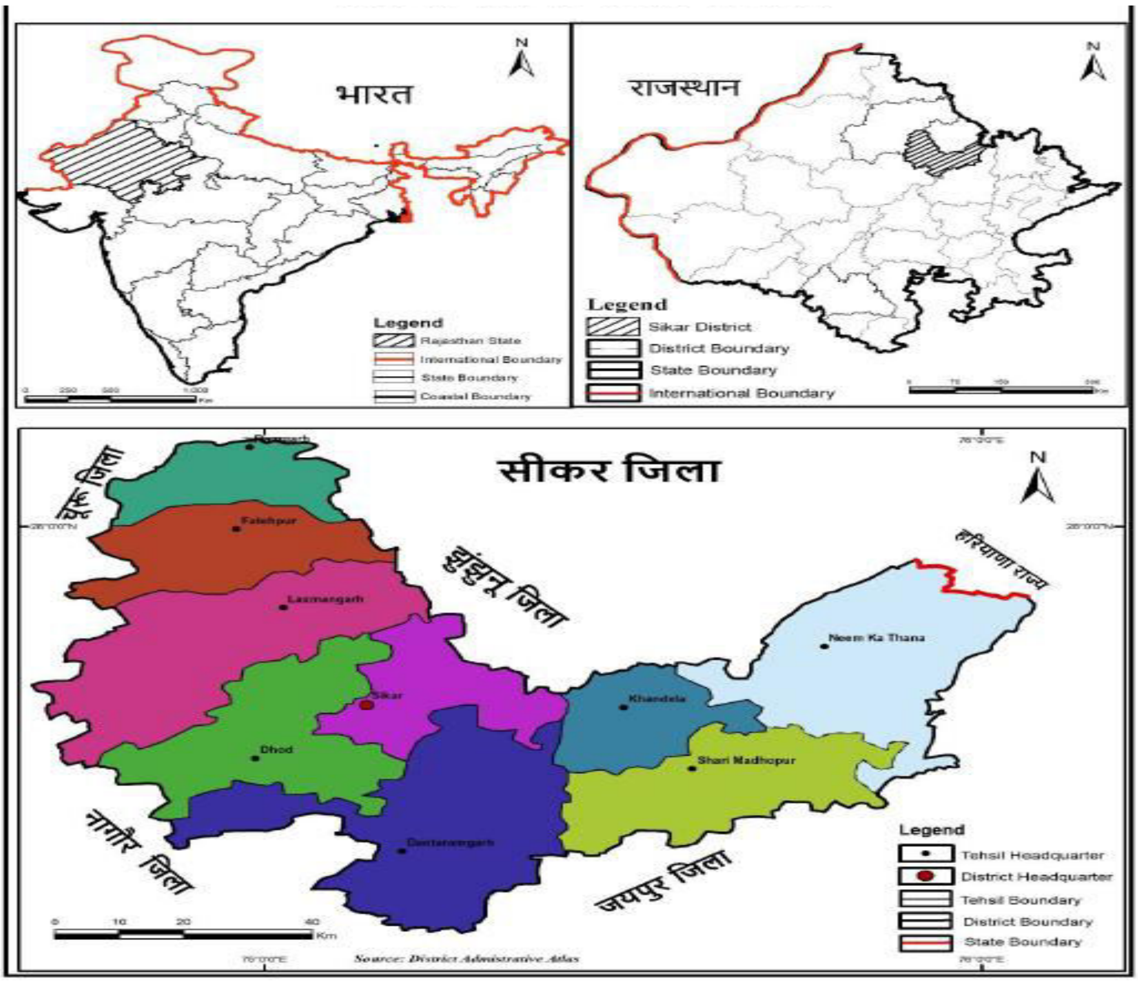

भूमि उपयोग :

भूमि मानव सभ्यता का आधार रही है और कृषि उसकी प्रमुख उपयोगिता। विशेषतः भारत जैसे कृषि प्रधान देश में भूमि का उपयोग और उसकी बदलती प्रवृत्तियाँ न केवल कृषि उत्पादन को प्रभावित करती हैं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय संरचनाओं को भी दिशा प्रदान करती हैं। भूमि उपयोग की प्रकृति और प्रवृत्तियाँ क्षेत्र विशेष की भौगोलिक दशाओं जैसे मिट्टी, जलवायु, स्थलाकृति, जल स्रोत एवं जनसंख्या घनत्व से गहराई से प्रभावित होती हैं। अध्ययन क्षेत्र सीकर जिला शेखावाटी आंचल का एक प्रमुख जिला है। जिले के कुछ भागों में अरावली की पहाड़िया फैली हुई है। जिले में पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण यहाँ के भूमि उपयोग के प्रतिरूप पर भी प्रभाव पड़ता है।

कृषि योग्य बंजर भूमि :

इस प्रकार की भूमि में वह भूमि सम्मिलित की जाती है जो कृषि योग्य है परन्तु किसी कारणवश इसे खाली छोड दिया जाता है। यह भूमि मजदूरों सिंचाई के साधन, वर्षा आदि के अभाव में तथा न्यायिक कारणों से खाली छोड दी जाती है। सीकर जिले में वर्ष 2014—15 से वर्ष 2022—23 के मध्य की अवधि में अधिक परिवर्तन देखने को नहीं मिलता है, जिले में वर्ष 2014—15 में इस प्रकार की भूमि का क्षेत्रफल 9443 हेक्टेयर था जो की बढ़कर वर्ष 2022—23 में 9246 हो गया। इस अवधि में इस प्रकार की भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल वर्ष 2021—22 में पाया गया था जो की 10065 हेक्टेयर है।

तालिका संख्या 01 :
सीकर जिले में भूमि उपयोग 2014—15 से 2022—23 (कृषि योग्य बंजर भूमि)

वर्ष	कृषि योग्य बंजर भूमि	कृषि योग्य बंजर भूमि का प्रतिशत
2014—15	9443	1.22
2015—16	9443	1.22
2016—17	4580	0.59
2017—18	9857	1.27
2018—19	9857	1.27
2019—20	9615	1.24
2020—21	9347	1.21
2021—22	10065	1.30
2022—23	9246	1.12

स्रोत : जिला सांख्यिकी रूपरेखा, 2023

जिले में अकृषित भूमि का दृश्य

पड़त भूमि :

इसमें उस प्रकार की भूमि को शामिल किया जाता है जिसकी उपजाऊ शक्ति लगातार फसले बोने से घट जाती है तथा मृदा का उपजाऊपन कम अर्थात उदासीन हो जाता है। किसान अपनी जोत की भूमि में इस प्रकार की कम उपजाऊ भूमि को कुछ समय के लिए एक वर्ष या एक फसल चक्र के लिए खाली छोड देता है। इस प्रकार पड़त भूमि का लम्बे समय तक कृषि उपयोग नहीं होने से बंजर भूमि में परिवर्तित हो जाती है। इस प्रकार की भूमि की जुताई व उर्वरकों द्वारा मृदा का उपजाऊपन बढाकर कृषि पैदावार बढाई जा सकती है तथा कुछ समय बाद उस पर पुनः कृषि की जाती है। इस प्रकार की पड़त भूमि को भी दो वर्गो में बांटा गया है :

1. चालू पड़त भूमि 2. पुरातन पड़त भूमि

1. चालू पड़त भूमि :

इसमें वह भूमि पाई जाती है जो कुछ ही समय के लिए पड़ती छोडी जाती है। यह भूमि फसल चक्र के अन्तर्गत एक वर्ष के लिए या एक फसल चक्र के लिए पड़त छोडी जाती है। किसान कम उपजाऊ भूमि को चालू पड़त छोड कर इस भूमि की मृदा में उपजाऊपन बढाने हेतु जैविक खाद, गोबर की खाद मवेशियों का रेवड बिठवाता है। सीकर जिले में वर्ष 2014—15 से वर्ष 2022—23 के मध्य की अवधि में इस भूमि के वितरण में अधिक परिवर्तन देखने को नहीं मिलता है, जिले में वर्ष 2014—15 में इस प्रकार की भूमि का क्षेत्रफल 42204 हेक्टेयर था जो की बढ़कर वर्ष 2022—23 में 42664 हो गया। इस अवधि में इस प्रकार की भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल वर्ष 2021—22 में पाया गया था जो की 109166 हेक्टेयर है।

2. पुरातन पड़त भूमि :

यह वह भूमि है जिसे एक बार छोडने के बाद पुनः सम्भाला ही नहीं जाता है और लगातार कृषि कार्यो जुताई बुआई से वंचित रखा जाता है। पुरातन पड़त भूमि का क्षेत्रफल जिले में वर्ष 2014–15 में 33086 हेक्टेयर पाया गया था जो की बढ़कर जिले में वर्ष 2022–23 में 46870 हेक्टेयर पाया गया है। इस अवधि में जिले में इस प्रकार की भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल वर्ष 2020–21 में पाया गया है जो कि 63956 हेक्टेयर है।

जिले में कृषित भूमि का दृश्य

तालिका संख्या 02 :
सीकर जिले में भूमि उपयोग (पड़त भूमि)

वर्ष	पुरातन पड़त भूमि	चालू पड़त भूमि	कुल पड़त भूमि
2014–15	33086	42204	75290
2015–16	33686	24804	58490
2016–17	40359	50256	90615
2017–18	43263	54855	98118
2018–19	43263	54855	98118
2019–20	48179	49161	97340
2020–21	63956	109166	173122
2021–22	45795	42644	88439
2022–23	46870	43265	90135

स्रोत : जिला सांख्यिकी रूपरेखा, 2023

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 3, May- June 2025 |

आरेख संख्या 01 : सीकर जिले में पड़त भूमि

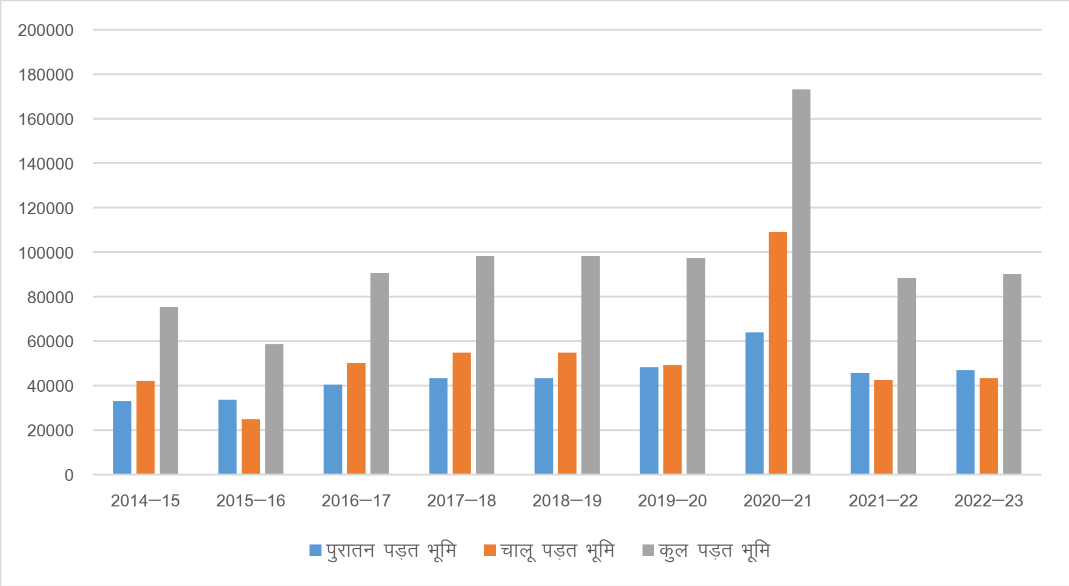

वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल :

इस प्रकार कि भूमि का क्षेत्रफल सीकर जिले में वर्ष 2014–15 में 538444 हेक्टेयर था जो कि वर्ष 2022–23 में घटकर 521878 हेक्टेयर पाया गया है। इसके अतिरिक्त इस अवधि में इस भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल वर्ष 2014–15 में 538444 हेक्टेयर पाया गया है। अतः ज्ञात होता है कि जिले में वास्तविक बोये गए क्षेत्रफल में कमी आयी है।

जिले में सिंचित भूमि का दृश्य

एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्र :

वह भूमि जिस पर एक वर्ष में दो या तीन फसले प्राप्त की जाती है। एक से अधिक फसले उन क्षेत्रों में अधिक पाई जाती है जहां पर मृदा अधिक उपजाऊ पाई जाती है तथा सिंचाई के साधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो तथा जहां कृषि की नवीन तकनीकी का प्रयोग किया जाता हो। इस प्रकार की भूमि का क्षेत्रफल जिले मे वर्ष 2014–15 में 222863 हेक्टेयर था जो की वर्ष 2022–23 में कम होकर 216914 हेक्टेयर पाया गया है। इस अवधि में जिले में इस प्रकार की भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल वर्ष 2016–17 में 353942 हेक्टेयर पाया गया था।

तालिका संख्या 03 :
सीकर जिले में भूमि उपयोग (शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल)

वर्ष	वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल	समस्त बोया गया क्षेत्रफल	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल
2014–15	538444	761307	222863
2015–16	535044	762507	227463
2016–17	532228	691210	353942
2017–18	514629	681279	166650
2018–19	522755	671578	148823
2019–20	509671	970353	160682
2020–21	429541	571926	142385
2021–22	522285	734722	212437
2022–23	521878	738792	216914

स्रोत : जिला सांख्यिकी रूपरेखा, 2023

आरेख संख्या 02 : सीकर जिले में शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल

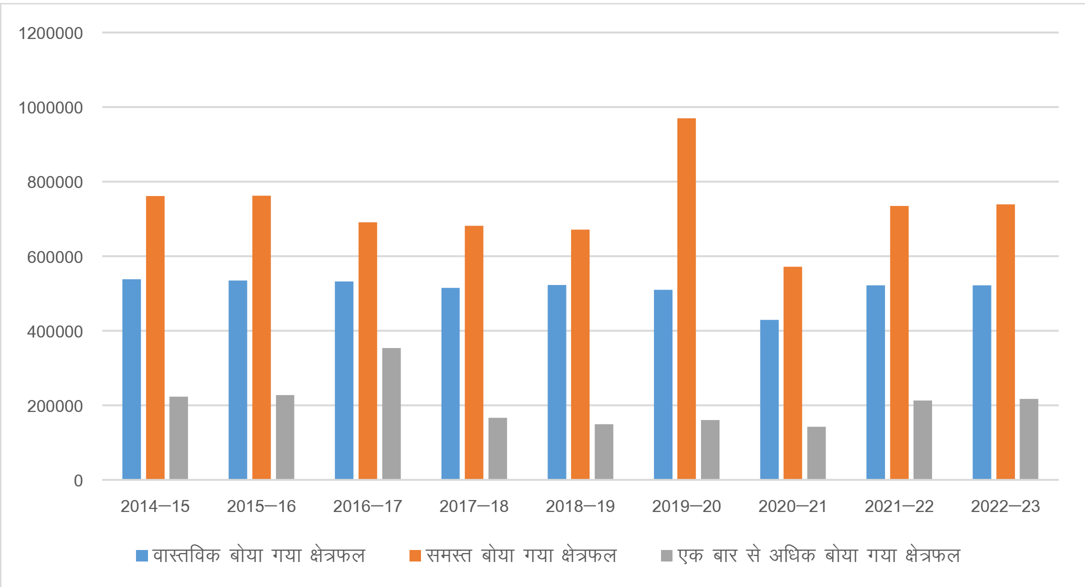

समस्त बोया गया क्षेत्रफल :

उक्त विवरण से स्पष्ट है की जिले में समस्त बोया गया क्षेत्रफल के वितरण में भी असमानता देखने को मिलती है। वर्ष 2014–15 में जिले मे इस प्रकार की भूमि का क्षेत्रफल 761307 हेक्टेयर था जो की वर्ष 2022–23 में आते–आते घटकर 138792 हेक्टेयर पाया गया है।

निष्कर्ष :

उक्त विवरण से स्पष्ट होता है की सीकर जिले में भूमि उपयोग के प्राऊप में वर्ष 2021–15 से वर्ष 2022–23 की अवधि के मध्य बड़े पैमाने पर परिवर्तन देखने को मिलता है। जिले में एक और जहां पडत भूमि के क्षेत्रफल में निरंतर कमी आई है वही दूसरी तरफ कुल बोये गए भूमि के वितरण में भी कमी देखने को मिलती है। सीकर जिले में पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ अब व्यावसायिक एवं नकदी फसलों की ओर अग्रसर हो रही हैं। भूमिगत जल पर बढ़ती निर्भरता, अंधाधुंध सिंचाई और आधुनिक कृषि तकनीकों के कारण भूमि की उर्वरता पर भी प्रभाव पड़ा है। कई क्षेत्रों में भूमि क्षरण एवं जल संकट जैसे नकारात्मक पहलू भी उभरकर सामने आए हैं। शोध का निष्कर्ष यह संकेत करता है कि यदि सीकर जिले में कृषि भूमि उपयोग को स्थायित्वपूर्ण एवं दीर्घकालिक बनाना है, तो भूगोल–आधारित क्षेत्रीय योजना, संसाधनों का सतत प्रबंधन एवं किसान–केन्द्रित नीतियाँ आवश्यक हैं। यह अध्ययन जिले में भूमि उपयोग नियोजन, कृषि नीति निर्माण और पर्यावरणीय संतुलन की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देने में सक्षम है।

References:

1. Bhuvan Portal. (2021). *Geospatial data for land use and agriculture*. Indian Space Research Organisation (ISRO). https://bhuvan.nrsc.gov.in/
2. Census of India. (2011). *District Census Handbook: Sikar*. Directorate of Census Operations, Rajasthan. https://censusindia.gov.in/
3. Department of Agriculture, Government of Rajasthan. (2020). *District-wise Agricultural Statistics Report: Sikar*. Jaipur: Directorate of Agriculture.
4. Government of Rajasthan. (2021). *Statistical Abstract of Rajasthan*. Directorate of Economics and Statistics, Jaipur. https://des.rajasthan.gov.in/
5. Hussain, M. (2012). *Agricultural Geography*. Jaipur: Rawat Publications.
6. Indian Council of Agricultural Research. (2021). *State of Indian Agriculture 2020-21*. Ministry of Agriculture and Farmers Welfare, Government of India.
7. Ministry of Jal Shakti. (2020). *Dynamic Ground Water Resources of India*. Central Ground Water Board, Government of India. http://cgwb.gov.in/

8. National Sample Survey Office. (2020). *Land and Livestock Holdings in India*. Ministry of Statistics and Programme Implementation, Government of India.
9. Rajasthan Remote Sensing Application Centre. (2020). *Land Use Land Cover Mapping of Rajasthan using Satellite Data*. RSAC, Jodhpur. http://rsacrajasthan.rajasthan.gov.in/
10. Sharma, P. D., & Singh, S. (2018). Changing land use pattern and its impact on agriculture: A case study of Sikar district, Rajasthan. *Indian Journal of Regional Geography*, 56(1), 42–55.
11. Sikar District Administration. (2022). *Sikar District Gazetteer*. Government of Rajasthan.
12. Singh, R. L. (2009). *Fundamentals of Human Geography*. Allahabad: Sharda Pustak Bhawan.

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com